12/30/2014

REVIEWED INTERNATIONAL JOURNAL

VOL III Issues VI

NOV-DEC
2014

Electronic International Interdisciplinary Research Journal (EIIRJ)

Chief-Editor:

Ubale Amol Baban

ISSN : 2277-8721

Impact factor:0.987

| www.aarhat.com

ISSN : 2277-8721
Electronic International Interdisciplinary Research Journal (EIIRJ)
Bi-Monthly Reviewed Journal Vol-III Issues VI Nov-Dec 2014

उच्च व्यावसायिक शिक्षा के अभियान्त्रिकी पाठ्यक्रम में जातिवार विद्यार्थी नामांकनः एक अध्ययन (उत्तर प्रदेश राज्य के सन्दर्भ में)

Research paper in Education

डॉ. महेश कुमार गंगल[1]

सहायक प्रवक्ता, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली, राजस्थान, भारत, 304022 ।

ज्योत्सना[1]

शोधार्थी, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली, राजस्थान, भारत, 304022 ।

शोध सार :– *प्रस्तुत शोध अध्ययन उत्तर प्रदेश राज्य में उच्च व्यावसायिक शिक्षा के अभियान्त्रिकी पाठ्यक्रम में जातिवार विद्यार्थी नामांकन के विकास को जानने के उद्देश्य से किया गया है। अध्ययन में अध्ययन की सुविधानुसार मात्रात्मक प्रदत्तों को वर्णात्मक रूप प्रस्तुत किया गया हैं। सारणी एवं रेखाचित्र के माध्यम से निष्कर्षों को दर्शाया गया हैं।*

प्रस्तावना :–

राष्ट्रीय लक्ष्यों के लिए जितना महत्त्व प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा का है उतना ही महत्त्व उच्च शिक्षा का भी है। उच्च शिक्षा किसी भी राष्ट्र के विकास में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वाहन करती है क्योंकि उच्च शिक्षा व्यक्ति को उसके ज्ञान–अवबोध, संश्लेषण, विश्लेषण, आलोचनात्मक चिन्तन, उचित दृष्टिकोण एवं मूल्यों के विकास तथा कार्य करने के तरीके में दक्षता की ओर ले जाती हैं। उच्च शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति अपनी क्षमताओं और योग्यताओं का उपयोग समाज एवं राष्ट्र के विकास के लिए करता हैं। इस बात का समर्थन करते हुए **जॉन डीवी ने** कहा है *"शिक्षा भावी जीवन की तैयारी मात्र नहीं है, वरन् जीवन–यापन कि प्रक्रिया हैं।"* इसी क्रम का आगे बढ़ाते हुए **विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग** ने उच्च शिक्षा की 3 अवस्थाएँ बतायी हैं –

1. **सामान्य शिक्षा** का लक्ष्य बुद्धिमानी से चुनी हुई जानकारी प्रदान करना है।
2. **उदार शिक्षा** का लक्ष्य विद्यार्थियों में रचनात्मक विचार पैदा करके स्वतंत्र चिन्तन एवं समीक्षात्मक आंकलन के लिए तैयार करना है।
3. **व्यावसायिक शिक्षा** का लक्ष्य विद्यार्थियों को जीवन के कार्य या अन्य विशिष्ट कार्य के लिए तैयार करना है।

देश में जहाँ गरीबी व बेरोजगारी जैसी समस्याएँ विद्यमान है, वहाँ उच्च व्यावसायिक शिक्षा की आवश्यकता व महत्त्व और भी अधिक बढ़ जाता है। भारत में यह शिक्षा कई अर्थों में सहायक सिद्ध हो सकती है, जैसे –

- व्यावसायिक शिक्षा व्यक्ति को सक्रिय व सजग बनाती है।
- व्यावसायिक शिक्षा देश के भौतिक संसाधनों के अधिकतम उपयोग में सहायता प्रदान करती है।
- व्यावसायिक शिक्षा मूल्यों, दृष्टिकोणों एवं आकांक्षाओं आदि के उचित विकास में सहायक होती है।
- व्यावसायिक शिक्षा से श्रम के सम्मान की भावना को विकसित करने में सहायता मिलती है।
- व्यावसायिक शिक्षा देश के भौतिक संसाधनों के अधिकतम उपयोग में सहायता प्रदान करती है।
- व्यावसायिक शिक्षा राष्ट्र व विश्व की आवश्यकताओं व अपेक्षाओं के अनुरूप व्यक्तियों का विकास करने में सक्षम बनाती है।

उर्पयुक्त उच्च व्यावसायिक शिक्षा आज वर्तमान में व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र के विकास में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। अध्ययन की सुविधानुसार अभियान्त्रिकी शिक्षा को उच्च व्यावसायिक शिक्षा के अर्न्तगत सम्मिलित किया गया है।

अभियान्त्रिकी शिक्षा :–

आज के वर्तमान युग में निरन्तर हो रहे परिवर्तनों को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। आज का युग एक वैज्ञानिक युग है। और यह बात सत्य भी हैं क्योंकि आज प्रत्येक स्थान पर चाहें वह शिक्षा स्थल हों या रेलवे स्टेशन सभी स्थानों पर अभियान्त्रिकी परिवर्तनों को देखा जा सकता हैं। अभियान्त्रिकी शिक्षा के बी. ई./बी. एससी (इंजी.)/बी. आक्रिटैक्चर पाठ्यक्रम को उच्च व्यावसायिक शिक्षा के अर्न्तगत लिया गया है। उच्च व्यावसायिक शिक्षा के अभियान्त्रिकी पाठ्यक्रम में दिन–प्रतिदिन हो रहे विकास सम्बन्धित परिवर्तनों को जानने के उद्देश्य से निम्न प्रश्नों की उदय हुआ। उच्च व्यावसायिक शिक्षा के विकास का परिदृश्य किस प्रकार बढ़ा रहा है? उच्च व्यावसायिक

शिक्षा के अभियान्त्रिकी पाठ्यक्रम के विकास की गति कैसी रही है? क्या उच्च व्यावसायिक शिक्षा के अभियान्त्रिकी पाठ्यक्रम के विकास की प्रवृति में स्थिरता है? क्या उत्तर प्रदेश राज्य में उच्च व्यावसायिक शिक्षा के अभियान्त्रिकी पाठ्यक्रम का पर्याप्त विकास हुआ है? उच्च व्यावसायिक शिक्षा के अभियान्त्रिकी पाठ्यक्रम में नामांकन की क्या प्रवृत्ति कैसी रही है?

उद्देश्य :– प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं –

1. उत्तर प्रदेश राज्य की उच्च व्यावसायिक शिक्षा के अभियान्त्रिकी पाठ्यक्रम में विद्यार्थी नामांकन प्रवृत्ति का सत्र 1991–1992 से 2000–2001 तक का निम्न सन्दर्भों में अध्ययन करना।

1.1 अभियान्त्रिकी पाठ्यक्रम में विद्यार्थी नामांकन प्रवृत्ति का अनु. जाति के विद्यार्थियों के सम्बन्ध में सत्र 1991–1992 से 2000–2001 तक का अध्ययन करना।

1.2 अभियान्त्रिकी पाठ्यक्रम में विद्यार्थी नामांकन प्रवृत्ति का जनजाति के विद्यार्थियों के सम्बन्ध में सत्र 1991–1992 से 2000–2001 तक का अध्ययन करना।

1.3 अभियान्त्रिकी पाठ्यक्रम में विद्यार्थी नामांकन प्रवृत्ति का सामान्य जाति के विद्यार्थियों के सम्बन्ध में सत्र 1991–1992 से 2000–2001 तक का अध्ययन करना।

शोध विधि :– प्रस्तुत शोध अध्ययन में उत्तर प्रदेश राज्य की उच्च व्यावसायिक शिक्षा के विकास की स्थिति का वर्णन होने के कारण शोध अध्ययन की प्रकृत्ति वर्णनात्मक है।

अध्ययन जनसंख्या :– उत्तर प्रदेश राज्य की उच्च व्यावासायिक शिक्षा प्रस्तुत शोध अध्ययन की जनसंख्या है।

शोध न्यादर्शन एवं न्यादर्श :– उत्तर प्रदेश राज्य की उच्च व्यावासायिक शिक्षा के अभियांत्रिकी पाठ्यक्रम के समग्र विद्यार्थी शोध अध्ययन की जनसंख्या है।

प्रदत्त संकलन हेतु उपकरण :– प्रस्तुत शोध अध्ययन में संख्यात्मक प्रदत्तों को आवश्यकतानुसार संकलित करने के लिए सारणियाँ निर्मित की गयी।

विश्लेषण एवं निष्कर्ष :– प्रस्तुत शोध अध्ययन से प्राप्त विश्लेषण एवं निष्कर्षों को सारणी एवं रेखाचित्र के माध्यम से दृर्शाया गया हैं –

सारणी

उत्तर प्रदेश की उच्च व्यावसायिक शिक्षा के अभियान्त्रिकी पाठ्यक्रम में

जातिनुसार विद्यार्थी नामाकंन

क्र सं.	शैक्षिक सत्र	अनु.अजाति	अनु. जनजाति	सामान्य जाति	कुल विद्यार्थी
1.	1991–92	0.63	0.45	98.92	14229
2.	1992–93	0.63	0.45	98.90	14236
3.	1993–94	0.62	0.44	98.87	14229
4.	1994–95	0.62	0.44	98.92	14229
5.	1995–96	0.62	0.44	98.92	14229
6.	1996–97	0.62	0.44	98.92	14229
7.	1997–98	0.50	0.36	99.13	17775
8.	1998–99	4.97	0.45	94.57	17775
9.	1999–00	24.23	1.11	74.64	17775
10.	2000–01	24.70	0.45	74.09	18441

स्त्रोत = चयनित शैक्षिक सांख्यिकी, मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय, दिल्ली।

रेखाचित्र

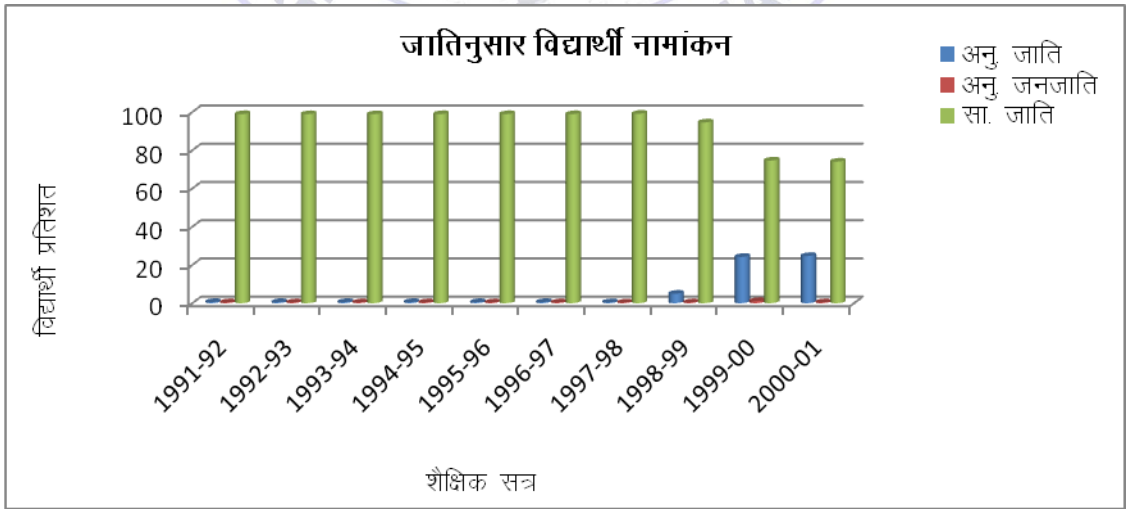

उर्पयुक्त साराणी एवं रेखाचित्र के माध्यम से स्पष्ट होता है कि सत्र 1991–92 में अनु. जाति के विद्यार्थियों का प्रतिशत 0.63, अनु. जनजाति के विद्यार्थियों का नामाकंन का प्रतिशत 0.45 तथा सा. जाति के विद्यार्थियों के नामाकंन का प्रतिशत 98.92 पाया गया। जोकि अनु. जाति एवं अनु. जनजाति के विद्यार्थी निम्न नामांकन तथा सा. जाति के विद्यार्थियों में अभियान्त्रिकी पाठ्यक्रम के प्रति अधिक जागरूकता तथा धनात्मक विकास को दृर्शाता है। अभियान्त्रिकी पाठ्यक्रम में अगले 5 सत्रों तक विद्याथियों के जातिनुसार नामाकंन के प्रतिशत में कोई परिवर्तन नहीं पाया गया, जिससे प्रतित होता है कि अभियान्त्रिकी पाठ्यक्रम में जातिवार विद्यार्थी नामांकन में लगभग 5 सत्रों तक स्थिरता की प्रवृत्ति विद्यामान रही। सत्र 1997–98 में जातिवार विद्यार्थी नामाकंन में अनु. जाति तथा अनु. जनजाति के विद्यार्थियों के नामांकन प्रतिशत में पिछले सत्रों की तुलना में कमी पायी गयी। जोकि ऋणात्मक वृद्धि की ओर इंगित करती है। सत्र 1998–99 में जातिवार विद्यार्थी नामांकन में अनु. जाति के विद्याथियों का प्रतिशत (4.97) तथा अनु. जनजाति के विद्यार्थियों का प्रतिशत (0.45) पाया गया जोकि पिछले सत्रों की तुलना में कई गुना वृद्धि दर को दृर्शाता है जिससे अभियान्त्रिकी पाठ्यक्रम में विद्यार्थी नामांकन धनात्मक विकास की ओर परिलक्षित होता हुआ पाया गया। परन्तु सा. जाति के विद्यार्थियों का नामांकन प्रतिशत (94.57) पाया गया जोकि पिछले सत्रों की तुलना में ऋणात्मक विकास की ओर इंगित होता है। सत्र 2000–01 में जातिवार विद्यार्थी नामांकन में अनु. जाति के विद्यार्थियों का नामांकन का प्रतिशत (24.70) तथा अनु. जनजाति के विद्यार्थियों का नामांकन का प्रतिशत (0.45) जिससे समयानुरूप अनु. जाति एवं अनु. जनजाति के विद्यार्थी नामांकन में अभियान्त्रिकी पाठ्यक्रम के प्रति आयी जागरूकता को देखा जा सकता हैं, वही सा. जाति के विद्यार्थियों के नामांकन का प्रतिशत (74. 09) पाया गया जोकि ऋणात्मक विकास होते हुये भी सामान्य से उच्च विकास को परिलक्षित करता है।

अध्ययन के निष्कर्ष :– प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये हैं –

- एक लम्बे समय तक विद्यार्थियों के नामांकन प्रतिशत में बदलाव ना होना, विकास की प्रवृत्ति में स्थिरता को दृशार्ता है।
- अनु. जाति के विद्यार्थियों का प्रतिशत अनु. जनजाति के विद्यार्थियों की तुलना में निम्न स्तर का पाया गया है। अतः अनु. जनजाति के विद्यार्थियों को अभियान्त्रिकी पाठ्यक्रम के प्रति अधिक जागरूक करने की आवश्यकता है।
- अनु. जाति के विद्यार्थियों के नामांकन का प्रतिशत सा. जाति के विद्यार्थियों की तुलना में निम्न स्तर का पाया गया है। अतः अनु. जाति के विद्यार्थियों को अभियान्त्रिकी पाठ्यक्रम के प्रति जागरूक करने की आवश्यकता है।

- सम्पूर्ण शोध अध्ययन अवधि (1991–92 से 2000–01) में जातिवार विद्यार्थी नामांकन के प्रतिशत में सामान्य परन्तु धनात्मक विकास पाया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

एम. एल. मित्तल. (2012). *उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा.* नई दिल्लीः पियर्सन. पृष्ठ संख्या।

आर. ए. शर्मा. (2001). *भारतीय शिक्षा का विकास.* मेरठः आर. लाल. बुक डिपो।

एस. पी. गुप्ता. (2001). *भारतीय शिक्षा का इतिहास,* विकास एवं समस्याएँ. इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।

पारसनाथ. राय. (2011). *अनुसंधान परिचय.* आगराः लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।

चयनित शैक्षिक सांख्यिकी, मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय, नई दिल्ली।

कपिल, एच. के. (2010). *अनुसंधान विधियाँ. आगरा* : एच. पी. भार्गव बुक हाउस।

Copyrights @ **डॉ. महेश कुमार गंगल ओर ज्योत्सना** .This is an open access reviewed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provide the original work is cited.